आनंद की लहर

जो नहीं है उसे कैसे कहा जाए, इसलिए जो है उनकी बात करनी पड़ेगी,,,नदी है ज़रने है, पहाड़ है,,हम कह सकते है कि यह है,,जब इंसान की बात आती है तो नहीं है,,वह नहीं है,,पर हम हमारा होना बहोत बड़ा छड़ा कर ज़ाहिर करते है,,कोई पेड़ अपने होने का प्रमाण नहीं देता,,इसलिए हम उसे काट देते है,,पशु पक्षी को हम पिंजरे में डाल देते है,,यह सिर्फ़ हम अपने होने के प्रमाण के लिए करते है,,पेड़ पोधे उनको काटने वाले से बड़े है,,क्योंकि पेड़ को काटने वाला उनसे जलता है,,,पेड़ पोधे जैसे हवामे जुलते है,,,क्योंकि उन्हें उनके होने का आनंद है,,पर जब तक कोई दूसरों को काटता है तब तक उन्हें अपने होने का आनंद कैसे मिलेगा,,हमारा जीवन दूसरों पर टिका है,,,इसलिए जब कोई दूसरों से अपने को ना छुड़ा ले तब तक उन्हें अपने होने का आनंद कैसे मिल सकता है,,अपने होने का आनंद उन्हें ही मिला है जिन्होंने ख़ुद को पा लिया है,,,पर जब तक किसिकी दृष्टि दूसरों पर है तब तक वो ख़ुद नहीं हो सकता,,,इसलिए जब कोई अपने होने के प्रमाण को दिखाने की कोशिश से छूट जाए तब उनकी यात्रा उनकी तरफ़ जा सकती है जो है,,तब वो सर्जनहार को देखेगा जिन्होंने पेड़ पोधे बनाए है,,जिन्होंने पहाड़ों की रचना की है,,तब उन्हें विविधता दिखाय देगी,,,तब वो सर्जनहार के लिए धन्यता से भर जाएगा,,,तब उनकी यात्रा उनकी तरफ़ होगी जो है,

Aasthit